''मैत्रेय पुष्पा के 'इदन्नमम 'उपन्यास में चित्रित ग्रामजीवन ''

कु.भिसे अंजना वामन
शोध छात्रा–एम.फिल हिंदी
द्वारा महेश प्रभाकर उबाळे,
490अ, गुरूवार पेठ, सातारा

प्रास्ताविकः–

आज के प्रगतिशील साहित्यकारों में मैत्रेयी पुष्पा एक ऐसी सजग साहित्यकार है, जो अपनी अनुभूति एवं चिंतनशीलता के आधार पर भारत की आत्मा'गॉव ' पहचानकर उसे पूरी ईमानदारी एवं यथार्थता से उपन्यासों में चित्रित करने में सफल रही है! 'इदन्नमम' उपन्यास इसका प्रमाण है! प्रस्तुत उपन्यास बुंदेलखंडीय ग्रामजीवन का यथार्थ दस्तऐवज है, जिसमें उन्होंने भारतीय पहाडी गॉवों की दयनीय दशा का चित्रण तथा गॉवो में रहनेवाले आम जनता के जीवनसंघर्ष को वाणी देने का सफल प्रयास किया है! देश को आजादी मिलने के पश्चात भी भारतीय गावों का उच्चवर्गिय, पूँजीपतियों तथा सरकारी अफसरों द्वारा शोषण हो रहा है! बढते औद्योगिकरण, पूँजीवाद, सरकार की मतलबी नीति के कारण उपेक्षित , पिछडे, पीडित गॉवों में रहनेवाले आम आदमियों, किसानो, मजदूरों और नारियों की सोचनीय जीवनगाथाही ग्रामजीन की दर्दभरी कथा बनी है!

'ग्रामजीवन' की संकल्पनाः–

'ग्रामजीवन' यह शब्द 'ग्राम ' और 'जीवन' के योग से बना है,'ग्राम' का अर्थ है 'गॉव' या 'खेडे' और 'जीवन' का अर्थ है 'जिंदगी', 'निर्वाह' या 'आयुष्य'अर्थात गॉवों में रहनेवालों की जिंदगी ग्रामजीवन है!'गॉव' की व्याख्या अनेक विद्वानों ने की है! राधाकृष्ण मुखर्जी के शब्दोंमें ''गॉव का मतलब ऐसा मानव समुह की जिस जगह सापेक्ष सांस्कृतिक और सामाजिक साम्य दिखाई देता है, जिसका स्वरूप अनौपचारिक और प्रामाणिक समूह की तरह ही होता है!''[1] इस प्रकार हम कह सकते हैं कि जिस आश्रय स्थानपर ज्यादा तर खेती करनेवाले किसान और खेती से संबंधित व्यवसाय करनेवाले लोग परस्पर सहकार्य से रहते हैं तथा अनेक जाति–धर्म, वर्ग के लोगों की जीवनपध्दती को ही 'ग्रामजीवन ' कहा जाता है!

किसी भी ग्रामजीवन पर सामाजिक, धार्मिक , आर्थिक, शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं राजनैतिक परिस्थितियों का गहरा प्रभाव पडता है, इसलिए प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित 'ग्रामजीवन'को भी इन्हीं परिस्थितीयों के परिप्रेक्ष्य में देखना अधिक समीचीन होगा!

सामजिक संदर्भः–

साहित्य समाज का दर्पण होता है, क्योंकि हर साहित्यकार अपने आसपास के समाज

जीवनसे प्रभावित होकर अपनी अनुभूति के आधार पर उसे हूबहू चित्रित करने का प्रयास करता है! मैत्रेयी पुष्पा ने बुंदेलखंड के पहाडी गॉव –सोनपुरा, श्यामली तथा उसके आसपास के गॉवों में रहनेवाले किसानों , मजदूरों के साथ नारियों का पुॅजीपति अभिलाख जैसे क्रेशर मालिकों, नेताओं, ठेकेदारों तथा सरकारी अफसरों द्वारा हो रहे शोषण , अन्याय–अत्याचार, भूखमरी, दरिद्रता का यथार्थ चित्रण किया है! सरकार के हाथों का खिलौना बने किसान , जो सरकार की विकास योजनाओं के तहत अपनी रोजी–रोटी के साधन खेती से भी हाथ धो बैठने के कारण हताश–निराश बने हुए है! तो मजदूरों की स्थिती इनसे भी बुरी है, उन्हें रहने को न घर है, न पहनने को कपडा, यहॉ तक अपने पेट की आग बुझाने के लिए उन्हें अपने बच्चों को पेडों के पत्ते उबालकर खिलाने पडते है,''रोटी के सपने कहॉ? हम तो चेंच करमेथा उबेल रहे है, निमन डार के बच्चन को खुबा देंगे, नातर सारी रात रोते रहेंगे नासमिटे!''[2]

नारी तो आज भी ग्रामीण समाज में दुःखी पीडित शोषित, प्रताडित, बलात्कारित एवं भोगविलास का साधन बनी अबला ही रहा है, इसलिए तो क्रेशर मालिक अभिलाख मजदूरों की औरतों को बेचकर नारी व्यापार करता है! मंदाकिनी कैलास मास्टर के वासना की शिकार बनती है, तो अभिलाख की वासना का शिकार बनी सगुना अभिलाख का कत्ल करके खुद आत्महत्या करने के लिए विवश हो जाती है! मंदा की मॉ प्रेम विधवा के अभिशप्त जीवन को त्यागकर, स्वयं अपनी इच्छासे जीने का निश्चय करती है, जिससे वह अपने घर, समाज मे घृणा, अपमान एवं प्रताडना की पात्र बनती है! फिर भी मंदाकिनी जैसी प्रगतिशील और चेतित, जागृत नारी समाज में हो रहे अन्याय–अत्याचार, शोषण का डटकर विरोध करने के लिए संघर्षमय जीवन का रास्ता अपनाती है, यही उपन्यासकार ने संदेश दिया है!

धार्मिक संदर्भः–

भारत देश धर्मप्रधान देश है, और हर एक के मन में अपने धर्म के प्रति श्रध्दा और विश्वास है, इसलिए तो किसी भी प्रकार की धार्मिक विडंबना या अपमान धार्मिक संघर्ष का कारण बनता है! साथ ही धर्म में राजनीति के प्रवेश के कारण सांप्रदायिकता बढती है! इस संदर्भ में पूरनचंद जोशी ने ठीक की कहा है कि, ''भारत में राजनीतिक ध्रूविकरण का मुख्याधार हिंदुओं तथा मुसलमानों के पारस्पारिक धार्मिक वैमनस्य में निहित है!''[3] इसलिए तो एकता और आपसी भाईचारे के लिए मशहूर गॉव श्यामली में राजनीति के प्रवेश के कारण धार्मिक संघर्ष उत्पन्न होता है!अयोध्या की मसजिद गिराकर वहॉ पर राममंदिर की स्थापना के कारण श्यामली के चीफ साब को हिंदुओं के जुल्म को सहना पडता है! धर्म मनुष्य को मानवता, एकता, बंधुता जैसे उदात्त तत्वों का पालन करने का संदेश देता है, मगर आज भी गॉवों मे धर्मांधता के चित्र दिखाई देते है! लोकतंत्र की जडे

हिलानेवाली यह विचारधारा अहितकारी बनी है, इसकी ओर यहॉ संकेत किया गया है!

सांस्कृतिक संदर्भः–

'संस्कृती ' मानव जीवन का अविभाज्य अंग होने के कारण आदिकाल से लेकर आजतक भारत में सांस्कृतिक पर्वो, त्यौहारों, मेलों आदि को हर्षो– उल्हास के साथ मनाया जाता है! प्रस्तुत उपन्यास में ग्रामजीवन की सांस्कृतिक विशेषताओं के अंतर्गत खेल–कूद, उत्सव, होली, दिवाली, रक्षाबंधन का त्यौहार लोकगीत, लोककथा और लोकनृत्य को चित्रित किया गया है जिनका गॉव मे विशेष महत्व होता है! ग्रामजीवन चाहे कितना ही दुःखों से भरा क्यों न हो, किंतु त्यौहारों, उत्सवों को ग्रामीण लोग बडे उत्साह से मनाते है! गॉव में साल के छः महिने किसी न किसी त्यौहारों, उत्सवों को ग्रामीण लोग बडे उत्साह से मनाते है! गॉव में साल के छः महिने किसी न किसी उत्सव मे ढोल मंजीरा बजता रहता है! सगाई के समय गाए जानेवाले गीत से ग्रामजीवन की सांस्कृतिक विशेषता के दर्शन होते हैं जैसे –''सिया बारी बनरी रघुनंदन बनरे, को–को बरौंते जाय मोरे लाल!''[4]

आर्थिक संदर्भः–

भारत देश खेतीप्रधान देश होने के कारण भारत की अर्थव्यवस्था का मूलाधार किसान और मजदूर को माना जाता है, जो आज खुद ही अर्थाभाव की समस्यासे पीडित है! सरकारी विकास योजना के कारण किसानो की खेती मुट्ठीभर कागज के नोटों के बदले छीन ली जाती है, जिनके सामने जिविकोपार्जन का कोई साधन नहीं है, तो औद्योगिकरण, यांत्रिकीकरण के कारण मजदूरी के लिए तरसनेवाले स्थानिक मजदूर, उच्चवर्णिय पूॅजीपतियॉ द्वारा शोषण का शिकार बने हुए हैं, जो अपनी भुख मिटाने के लिए तालाब के किडे–मकौडें तक खाने के लिए विवश एवं मजबूर होते है! अवधा मजदूरनी के घर आई बारात विषैले जीव–जंतुओ को भूनकर खाने से विषबाधा से मर जाती है! उसमें दूल्हे–दूल्हन की भी मौत होती है, ''ठीक सामने सिरीदेवी और बलदेव बिखरे पडे थे मृत, अवधा की ऑखे पथराई हुई –निर्जिव बुत सी!''[5]

आर्थिक शोषण से पीडित , शोषित किसान, मजदूरों के साथ–साथ सदियों से दबी–कुचली एवं उपेक्षित नारियॉ भी हैं, जिन्हें जीवन जीने के लिए विवशता एवं मजबूरी से शरीर बचेना पडता है! गरीबी और लाचारी की मारी बिब्बन के बारे में कुसुमा कहती है, ''पेट पापी होता है, हम तो यहॉ तक समझ गए कि, पेट की होरी बुझाने को आदमी अपना मॉस तक खा जाता है, नहीं तो क्या बन्ने मास्साब की बिटीयॉ, चीफ साब की भतिजी धंधा कर लेती?''[6]

शैक्षिक संदर्भः–

शिक्षा को जीवन पहली सीढी कहा जाता है, मगर बुंदलेखंडीय पहाडी गॉवो की शिक्षा की

दुरावस्था, शिक्षा व्यवस्था में हो रहे भ्रष्टाचार , बच्चों को पढानेवाले अध्यापकों की लापरवाही, शैक्षिक साधनों का अभाव साथ ही ग्रामीण समाज की शैक्षणिक उदासिनता तथा उच्चवर्णियों द्वारा किए जानेवाले शोषण, अधूरी शिक्षा व्यवस्था के कारण ग्रामीण बच्चों को कई कठिनाईयों का सामना करना पडता है! जिसका यहॉ अंकन किया गया है! शिक्षा व्यवस्था भी सरकार के हाथों की कठपुतली बनी हुई है, परिणामतः ग्रामविकास का स्वांग करनेवाली सरकार पहाडी गावों में रहनेवालो बच्चों की पढाई के लिए एक स्कूल भी नही बनवाती! जिसके संदर्भ में नरसिहंगड के सरपंच कहते है, ''इस अंधेर को क्या करे कि, सडक के आसपासके गॉव में दो–दो स्कूल और अपने दूर–दराजी गॉव मीलों पर एक स्कूल के लिए तरसते है हम!''[7] साथ ही शिक्षा व्यवस्था में हो रहे भ्रष्टाचार के कारण मेहनत, ईमानदारी और लगन से पढनेवाले मकरंद, भृगदेव जैसे छात्र भ्रष्टाचार के दुष्परिणामों को सहने के लिए विवश होते है! जातीयता और वर्णव्यवस्था का प्रभाव शिक्षा व्यवस्था पर भी होने के कारण कई निम्नवर्गीय छात्रों का उच्चवर्णियों द्वारा शोषण किया जाता है!''[8] यह कथन यहॉ यथार्थ लगता है! शिक्षा के प्रति सच्ची लगन, आस्था, मेहनत करने की इच्छा होने के बावजूद भी भृगदेव जैसे दलित युवा अपने पर हो रहे अन्याय–अत्याचार, शोषण के कारण विवश होकर पढाई छोडकर भाग जाते है! तो मंदानिकी जैसे बच्चे गॉव मे अधूरी शिक्षा व्यवस्था होने के कारण चाहकर भी आगे पढ नही पाते है! पहाडी गॉवों की शिक्षा व्यवस्था पर यहॉ गहराई से सोचा है, ऐसा लगता है!

राजनीतिक संदर्भः–

भारतीय ग्रामजीवन राजनीति से प्रेरित एवं परिचालित होता है! गॉवों के विषय में सबकी यही धारण होती है कि, वे सहज और सरल होते है तथा राजनीति से गॉव का संबंध नही होता , परंतु वास्तविकता तो यह है कि, भारतीय ग्रामजीवन पर राजनीति का गहरा असर हो रहा है, इस संदर्भ में डॉ. प्रेमकुमार का कथन यथार्थ ही है, ''ग्रामांचल में राजनीति पहले भी थी किंतु उस समय औसत ग्रामीण उसकी उपेक्षा करता था, परंतु अब सभी गॉव और कस्बे राजनीति के संक्रामक रोग से ग्रस्त हो गए है!''[9]

आज के भारतीय नेता मतलबी एवं पदलोलुप्त है, राजनीति को सत्ता प्राप्ति का साधन मानते है और इसलिए चुनाव के समय ही वोट मॉगने के लिए गरीब अज्ञानों जनता को फॅसाते है! राजा साब जैसे स्वार्थी नेता के बारे में मंदा कहती है, ''राजा साब राजकीय साजीश में लगे है; ये अंधरे , बहरे और सुन्न आदमी है, संवेदनाशून्य इन्सान !पॉचो इंद्रियों को जागृत करते है तो वोट के समय, तब ही चेतते है दहाडकर!''[10] विकास के नामपर शोषण करनेवाले ग्रामीणों की समस्याओं को अनदेखा करनेवाले, वोट पाने के लिए गलत रास्ता अपनानेवाले राजनेताओं का पर्दाफाश करने

का निश्चय मंदाकिनी तथा जनता करती है! अंत में वोट न देने का फैसला करते है! राजनेताओं के असली चेहरे को पहचानकर उनकी पोल खोलने में मंदाकिनी जैसी होशियार ग्रामनारी जागृत दिखाई देती है! नेताओं का सच्चा रूप जनता के सामने खोलकर अपने चेतित और क्रांतीकारी रूप को दर्शाती है!

निष्कर्षः–

अतः यह स्पष्ट है कि, मैत्रेयी पुष्पा ने बुंदेलखंडीय ग्रामजीवन का यथार्थ चित्रण करके भारतीय गॉवों की दयनीय, सोचनीय और यातनामय जीवनगाथा को वाणी देने का प्रयास किया है! जिससे लगता है कि, उन्होंने सच्चे अर्थ से भारतीय आत्मा को पहचाना है और उसे 'इदन्नम' में चित्रित किया है! सरकार की ग्रामविकास योजनाओं का खोखलापन एवं सरकार की अंधनीति, ठेकेदारों और मालिकों द्वारा मजदूरों का होनेवाला शोषण, किसनो, मजदूरों पर होनेवाला अन्याय, नारियों के साथ हो रही जबरी का अंकन किया गया है! साथ ही पुराने जर्जर रूढी –परंपराओं तथा रीति–रिवाजों, अंधश्रध्दाओं कें बंधन में जकउी हुई(दादी) बऊ जैसी ग्रामीण महिलाओं, को सही राह दिखानेवाली, भूखमरी, गरीबी से दुःखी पीडित जनता का साथ देनेवाली प्रगतिशील नारीजीवन की प्रतिनिधी के रूप में संघर्षशील, संकल्पशील एवं जागृत प्रभावशाली व्यक्तित्व की मंदाकिनी को चित्रित करके नारी के अबल रूप के स्थान पर सबला रूप को प्रस्तुत कर नारीशक्ती का परिचय दिया है! ऐसा लगता है कि, प्रस्तुत उपन्यास, भारतीय ग्रामजीवन की तसवीर ही है!

संदर्भ सूचीः–

1) प्रा.ए.वाय.कोंडेकर, 'भारतीय समाजाचा परिचय ', फडके प्रकाशन, कोल्हापूर,1997.

2) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, 1999, पृ.228

3) डॉ. पूरनचंद जोशी, 'परिवर्तन और विकास के सांस्कृतिक आयाम', राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, 1987, पृ.149

4) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, 1999, पृ.106

5) वही, पृ.236

6) वही, पृ.261

7) वही, पृ.232

8) डॉ. बी.डी. सगरे, 'दलित साहित्य–चिंतन के आयाम', उन्मेष प्रकाशन, सातारा, 2009. पृ.61

9) डॉ. उत्तमभाई एल. पटेल,'ऑचलिक उपन्यास में ग्रामजीवन ', क्वालिटी बुक्स पब्लिशर्स, कानपुर, 1999, पृ.76

10) मैत्रेयी पुष्पा, 'इदन्नमम', राजकमल प्रकाशन , नई दिल्ली, 1999, पृ.310